भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उग्रवादी पक्ष की भूमिका

जैसा कि हम जानते हैं कांग्रेस की स्थापना के बाद इसमें उदारवादी विचारधारा स्वीकार करने वाले नेताओं की बहुलता थी। ये लोग ब्रिटिश सरकार के प्रति नरम रवैया अपनाते थे। क्रांति का विरोध करते थे एवं क्रमशः सुधार चाहते थे। शुरुआती 20 वर्षों तक ऐसा ही चला। लेकिन बाद में जो नेता उभर कर आए, वे क्रांति की बात करने लगे, वे उग्र विचार रखने वाले नेता थे। उन्होंने पूर्ण-स्वतंत्रता की मांग को उचित ठहराया और जनता को उग्र तरीकों/साधनों का प्रयोग कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया।

ऐसा नहीं है कि उग्र क्रांतिकारी रातोंरात पैदा हो गए। भारत तथा विदेशों में ऐसी अनेक घटनाएं घटित हुई जिन्होंने भारतवासियों को पूर्णस्वतंत्रता प्राप्ति हेतु उग्र तरीके अपनाने को प्रेरित किया। उग्रता को प्रोत्साहित करने वाले कुछ कारक निम्नलिखित हैं:

— कांग्रेस के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप जो 1892 का भारतीय परिषद अधिनियम पारित हुआ, उसमें कई कमियाँ थी। अतः इसने कांग्रेस के भीतर और बाहर रोष उत्पन्न किया।

— धार्मिक पुनरुत्थानवाद और सांस्कृतिक नवजागरण ने भारतीयों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रेरित किया। वे इसे अपना परम-पवित्र धार्मिक कर्तव्य समझने लगे।

— भारत में बार-बार प्राकृतिक आपदाएं आ रही थी और इस संकट की घड़ी में भी अंग्रेज सरकार फीरंगियों के साथ अत्याचार कर रही थी जिसके परिणामस्वरूप जनता गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने के लिए बेचैन हो उठी और उग्रवादी नेताओं का पदार्पण हुआ।

— आर्थिक असंतोष ने भी उग्रवाद को बढ़ावा दिया। भारतीय कितना भी पढ़-लिख लें, उन्हें ऊंचे पद नहीं दिए जाते थे। इसके अलावा, 1894 में विदेशी सामानों पर आयात-कर समाप्त

Scanned with CamScanner

कर दिया गया जिससे देशी सामान महँगा हो गया और लोग विदेशी सस्ते सामान खरीदने लगे। इस प्रकार की कई गलत नीतियों के कारण भारतीय जनता के मन में आक्रोश फूट गया और वे उन नेताओं का समर्थन करने लगे जो उग्र विचारों के समर्थक थे।

— अंग्रेज अपने को श्रेष्ठ और भारतीयों को हीन समझते थे। उनके अंग्रेजी अखबार पत्रों में भी भारतीयों का अपमान किया जाता था। भारतीयों को भद्दी-भद्दी गालियाँ दी जाती थी। इससे भी देश में और कांग्रेस के भीतर अंग्रेजों से नफरत करने वाले वर्ग का उदय हुआ।

— भारतीयों के साथ अंग्रेज विदेशों में भी दुर्व्यवहार किया करते थे। अतः अंग्रेजों के प्रति रोष बढ़ना स्वाभाविक था।

— पड़ोसी देशों में होने वाली क्रांतिकारी घटनाएं, जैसे - अमरीका का स्वतंत्रता संघर्ष, आयरलैंड का संघर्ष आदि ने भी भारतीय स्वतंत्रता के लिए लोगों को प्रेरित किया।

— लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और विपिनचन्द्र पाल (लाल, बाल, पाल) ने उग्र राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

— लार्ड कर्जन का शासन काफी अत्याचारपूर्ण था। इसने भी भारत में उग्रवादी गतिविधियों को बढ़ावा दिया। उदाहरण के लिए लार्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन कर दिया था और कहा कि यह प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से किया गया था। लेकिन जनता को सच्चाई पता थी कि यह बंगाल में जनता के बीच फूट डालने और शासन करने की नीति थी। अतः लार्ड कर्जन की खराब नीतियों ने भी कांग्रेस के भीतर रोष उत्पन्न किया जिससे कि उग्रवादी गुट को प्रोत्साहन मिला।

Scanned with CamScanner

उग्रवादी ब्रिटिश शासन में सुधार की बात नहीं करते थे। वे तो उसका अंत करना चाहते थे। उनका लक्ष्य था — पूर्ण स्वराज।

साध्य प्राप्ति हेतु साधनों के चुनाव को लेकर भी उग्रवादियों और उदारवादियों में अंतर था। जैसा कि लोकमान्य तिलक ने कहा था — "हमारा आदर्श दयायाचना नहीं, आत्मनिर्भरता है।" उग्रवादी विचारधारा रखने वाले नेताओं ने 'निष्क्रिय प्रतिरोध' के कार्यक्रम को अपनाया। उन्होंने बहिष्कार, स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा पर भी बल दिया।

उग्रवाद ने राष्ट्रीय आंदोलन को काफी तीव्र गति से आगे बढ़ाया। उन्होंने इस बात को समझा कि प्रार्थना करने से अंग्रेज नहीं मानने वाले हैं। बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन जैसे रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से उग्रवादियों ने काफी सफलता प्राप्त की। देश हमेशा इनके त्याग और बलिदान का ऋणी रहेगा।

Political science
B.A (Hons.) Part III
Paper 8
Unit 3

Sheo Vivek
Assistant Professor
(Political science)
Shershah College,
Sasaram (Bihar)

Scanned with CamScanner